धर्म का उद्देश्य (objective of Religion)

धर्म का मूलभूत उद्देश्य केवल पूजा-पद्धति या ईश्वर में विश्वास तक ही सीमित नहीं होता, बल्कि यह सम्पूर्ण मानव जीवन को एक उच्चतर उद्देश्य की ओर प्रेरित करने वाला मार्ग है। धर्म व्यक्ति को न केवल आध्यात्मिक दृष्टि से जागरूक बनाता है, बल्कि सामाजिक, नैतिक एवं मानसिक विकास की ओर भी अग्रसर करता है। एक मानव जीवन को दिशा, उद्देश्य एवं अनुशासन प्रदान करता है। इसके माध्यम से जीवन के रहस्यों को समझना, मृत्यु के भय से मुक्त होना और अन्ततः मोक्ष की प्राप्ति सम्भव होता है। धर्म जीवन की एक मूल्याधारित संरचना प्रदान करता है, जो व्यक्ति को सच्चरित्रता, सहिष्णुता और सेवा की भावना से अभिप्रेरित करता है।

1. आत्मा की उन्नति और मोक्ष प्राप्ति (Spiritual Upliftment and Liberation) – धर्म का प्रमुख उद्देश्य आत्मा की उन्नति और मोक्ष की प्राप्ति है। यह मान्यता लगभग सभी धर्मों में पाई जाती है कि मनुष्य का जीवन केवल भौतिक सुखों तक सीमित नहीं है; बल्कि इसका परम लक्ष्य आत्मा की शुद्धि और ईश्वर की प्राप्ति है। धर्म साधना, ध्यान, तप और भक्ति के माध्यम से आत्मा को सांसारिक बंधनों से मुक्त करने का मार्ग दिखाता है। मोक्ष की अवधारणा व्यक्ति को लोभ, मोह, अहंकार जैसे विकारों से ऊपर उठने की प्रेरणा देता है।

2. नैतिकता और सदाचार की स्थापना (Establishment of morality and virtue) – धर्म का दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य नैतिकता और सदाचार को जीवन में स्थापित करना है। धर्म के माध्यम से व्यक्ति को सत्य, अहिंसा, संयम, करुणा, ईमानदारी जैसे मूल्यों की शिक्षा दी जाती है। ये मूल्य न केवल व्यक्ति को सुदृढ़ बनाते हैं, बल्कि समाज में सद्भाव और शांति को भी सुनिश्चित करते हैं। धर्म यह सिखाता है कि केवल बाहरी कर्मकांड ही पर्याप्त नहीं है, जब तक मन और आचरण में पवित्रता न हो।

3. सामाजिक एकता और सहयोग की भावना (Promotion of Social Unity and Co-operation) – धर्म केवल व्यक्तिगत साधना नहीं है, बल्कि सामुदायिक जीवन का भी मार्गदर्शक है। यह जाति, भाषा, वर्ग आदि के भेद को मिटाकर समाज में एकता और सहिष्णुता की भावना उत्पन्न करता है।

4 जीवन के रहस्यों का समाधान (explaining the mysteries of life) — धर्म का एक गूढ़ उद्देश्य जीवन और सृष्टि के रहस्यों को स्पष्ट करना भी है। यह जन्म, मृत्यु, आत्मा, पुनर्जन्म, कर्म और सत्य जैसे गूढ़ प्रश्नों का उत्तर प्रदान करता है। धर्म इन प्रश्नों को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखता है और व्यक्ति को यह समझने में सहायता करता है कि उसका जीवन एक उद्देश्यपूर्ण यात्रा है।

5. मानसिक और भावनात्मक संतुलन (mental and emotional Balance) — मानसिक और भावनात्मक जीवन को संतुलित रखने में सहायक होता है। जीवन में आने वाली विविध कठिनाइयाँ, शोक, दुःख और असफलताएँ व्यक्ति को मानसिक रूप से विचलित कर सकती हैं। ऐसे में धर्म एक आश्रयस्थल के रूप में कार्य करता है, जहाँ व्यक्ति साधना, ध्यान और भक्ति के माध्यम से आत्मिक शांति और मानसिक स्थिरता प्रदान करता है।

6. अनुशासन और जीवन-निर्देशन (Discipline and Life Guidance) — धर्म व्यक्ति को जीवन में अनुशासन एवं नियमों का पालन करने के लिए प्रेरित करता है। यह दैनिक जीवन की गतिशीलता, गतिविधियों को नियंत्रित करने वाले नैतिक सिद्धान्तों और विधियों का एक संग्रह है।

7. सेवा और परोपकार की भावना का विकास (Cultivation of Service and Admiration) — धर्म का उद्देश्य व्यक्ति में सेवा और परोपकार की भावना को जाग्रत करना भी होता है। सभी धर्मों में यह शिक्षा दी जाती है कि दूसरों की सहायता करना, दुःखी और पीड़ितों की सेवा करना, ईश्वर की सच्ची उपासना है। यह भावना न केवल आत्मिक शांति प्रदान करती है, बल्कि समाज में करुणा और प्रेम का वातावरण भी बनाती है।

8. धर्म के सार्वभौमिक उद्देश्य (Universal Aims of Religion) — धर्म केवल किसी एक जाति समूह या समाज के लिए नहीं, बल्कि समस्त मानव जाति के लिए कल्याणकारी है। इसका अंतिम उद्देश्य मनुष्य को सार्वभौमिक प्रेम, शांति और बंधुत्व की भावना से जोड़ना है। यह संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानकर "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को बढ़ावा देता है।

अतः उपरोक्त उद्देश्यों से स्पष्ट होता है कि धर्म केवल एक धार्मिक विश्वास प्रणाली नहीं, बल्कि संपूर्ण जीवन को दिशा और उद्देश्य देने वाली व्यवस्था है। यह व्यक्ति को आत्मिक, नैतिक, मानसिक, सामाजिक और वैश्विक स्तर पर परिपूर्ण बनाने का प्रयास करता है।

समाप्त